शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2014

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में निहित संदेश और उसका महत्व

डॉ.शीतल राठौर
विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब सिक्खों का प्रमुख धर्मग्रन्थ है, जिसे सिक्खों के दशम गुरु गुरुगोबिन्दसिंह ने गुरु रूप में प्रतिष्ठित किया था। यह 1430 पृष्ठों का एक वृहद् ग्रन्थ है, जो मूल रूप से पंजाबी भाषा और गुरुमुखी लिपि में लिखा गया है। गुरु ग्रन्थ साहिब के सम्पादन का कार्य पाँचवें गुरु गुरु अर्जुन देव ने सन् 1604 ई. में किया। वाणी संकलन के समय इस ग्रन्थ को पोथी कहा गया।

प्रस्तावना

साहिब शब्द का शाब्दिक अर्थ यद्यपि 'स्वामी' या 'मालिक' ही होता है तो भी सिक्ख परम्परा में अब यह शब्द रूढ़ होकर सकारात्मक बन गया है। अतः पोथी को 'पोथी साहिब' कहा जाने लगा और लम्बे समय तक ऐसा ही कहा जाता रहा। तभी संकलन का बड़ा आकार देखकर कभी किसी पोथी के बृहदाकार का पर्याय 'ग्रन्थ' शब्द का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया और 'पोथी साहिब' अकस्मात् 'ग्रन्थ साहिब' बन गया। सन् 1708 ई. में दशम गुरु गुरु गोबिन्दसिंह ने जब गुरु परम्परा का अन्त कर वाणी के रूप में ही 'गुरु' की स्थापना की तो उन्होंने ग्रन्थ साहिब के आरम्भ में गुरु शब्द जोड़कर पूरा नाम 'गुरु ग्रन्थ साहिब' कर दिया। तब से अब तक यही नाम प्रचलित है और इसी नाम से इस प्रसिद्ध ग्रन्थ को पहचाना जाता है। इस महान् ग्रन्थ में सिक्खों के 6 गुरुओं, 15 भक्तों, 11 भट्टों एवं 4 प्रमुख गुरु सिक्खों की वाणी संगृहीत हैं, जो इस बात का प्रतीक है कि इस महान् ग्रन्थ में किसी विशेष जाति, धर्म को स्थान नहीं देकर सम्पूर्ण मानव जाति को एक माना है और सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए ही इस ग्रन्थ का सम्पादन किया गया है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का सन्देश

गुरु ग्रन्थ साहिब में भिन्न-भिन्न जाति एवं धर्मों के 15 सन्तों की वाणी को स्थान दिया गया है, जिसमें भक्त रविदास चर्मकार थे, कबीर जुलाहा थे, नामदेव छिंपी थे और फरीद मुसलमान थे। इन भक्तों की वाणी को भी उतने ही आदर के साथ पढ़ा जाता है, जितना गुरुओं की वाणी को। जिसका सीधा-सीधा अर्थ यह निकलता है कि ग्रन्थ में धर्म-जाति आदि को महत्त्व न देते हुए उच्च बौद्धिक विचारों को महत्त्व दिया गया है। यह ग्रन्थ ऊँच-नीच के भेदों, जात-पात, बाह्याडम्बरों, अन्धविश्वासों आदि को न मानते हुए मानव धर्म को प्रमुख स्थान देता है। गुरुओं की विचारधारा आधुनिक समाजवादी विचारधारा की पूर्वज थी। गुरुओं का ध्येय वर्गहीन समाज की स्थापना, आर्थिक विषमता और ऐश्वर्य जीवन का

परित्याग, श्रम की महत्ता पर बल, पारस्परिक भ्रातृ-भाव के लिए पंगत-संगत का संचालन और समान आर्थिक वितरण था। ग्रन्थ की वाणी में धर्म की एकता के सिद्धान्त पर प्रकाश डालते हुए बताया है कि सत्य हर धर्म का आधार है और ईश्वर के सच्चे नाम के सहारे ही मनुष्य इस भवसागर रूपी संसार को पार कर सकता है। गुरु अर्जन देव विश्व के सभी धर्मों की परिभाषा का निचोड़ प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि परमात्मा का नाम जपना और निर्मल कर्म (अच्छे कर्म) करना ही सर्वोत्तम धर्म है - सरब धरम नहि स्त्रेसट धरमु। हरि को नामु जपि निरमल करमु।।1

गुरु ग्रन्थ साहिब में वाणीकारों ने जीवन के प्रत्येक पक्ष पर प्रकाश डाला है। ग्रन्थ की वाणी में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को कर्मण्य एवं व्यवसायशील बनना चाहिए और गृहस्थ जीवन का भार पूरे उत्तरदायित्व के साथ निभाना चाहिए। समाज पर भार बनकर निष्कर्मण्य जीवन व्यतीत करने वाले को निरुत्साहित किया गया है। इस प्रकार समष्टि के अंग व्यष्टि के व्यक्तित्व का विकास कर समाज में नैतिक आदर्शों की स्थापना की है। सत्संग का महत्त्व बताकर धार्मिक स्थानों को समाजिक संगठन एवं विचार-विनिमय का केन्द्र बनाया। व्यक्तिगत उदाहरणों से समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अत्याचार के विरोध में बलिदान तक होने की प्रेरणा देकर निडर, निर्भय, स्वस्थ एवं स्वतंत्र समाज की नींव डाली। इस प्रकार सम्पूर्ण समाज को संगठित कर राष्ट्रीय स्तर पर लाने का प्रयत्न किया। अतः मानव धर्म के माध्यम से समाज में समता 'ग्रन्थ' की सबसे बड़ी सामाजिक देन है और 'मानव धर्म' की स्थापना इस महान् ग्रन्थ का सन्देश है। .

ग्रन्थ की उपयोगिता

पवित्र गुरु ग्रन्थ साहिब अध्यात्म ज्ञान का मूल स्रोत है। अध्यात्म ज्ञान सदा विकासमान रहता है जिसकी प्रासंगिकता हर काल में हुआ करती है। ग्रन्थ के वाणीकार जब वाणी का सृजन कर रहे थे तब उस काल में भी इसकी प्रासंगिकता थी और वर्तमान में तो इसकी वाणी की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है। जैसे आज दलित-चेतना उभर कर समाने आई है परन्तु गुरु नानक देव जी ने तो उस काल में ही कह दिया था - 'नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीच'2 गुरु अर्जन देव ने जात-पात का भेद मिटाने के लिए उस काल में ही चर्मकार जाति के रविदास की वाणी को ग्रन्थ में स्थान दिया। गुरु अर्जन देव ने सामाजिक व सांस्कृतिक एकता स्थापित करने के लिए ही भिन्न-भिन्न इलाकों, धर्मों, बोलियों एवं सम्प्रदायों के 15 सन्तों की वाणी को गुरु ग्रन्थ साहब में स्थान दिया जिस कारण यह ग्रन्थ तत्कालीन एवं समकालीन सभ्याचार जागृति का मूल स्रोत बन गया है। मध्यकाल में जब जनता मुसलमानों के अत्याचारों से त्रस्त थी चारों ओर पाखण्ड और अत्याचार का बोलबाला था। तब इन गुरुओं और सन्तों ने अपने उत्तरदायित्व को निभाते हुए समाज में अपनी वाणी से समता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इन्होंने मानव जीवन, समाज और व्यवहार को कल्पना की दृष्टि से नहीं देखा बल्कि जीवन की यथार्थ भूमि पर उसके दर्शन किये। सामाजिक जीवन को अपनाते हुए उन्होंने सत्य को सहज भाव से ही आत्मसात् कर लिया था। मध्ययुग में

समाज में नारी का स्थान उपेक्षित था। ग्रन्थ के वाणीकारों ने नारी को समाज की मूल इकाई कहा और नारी का महत्व प्रतिपादित करते हुए उन्होंने उसे समुचित सम्मान का अधिकारिणी ठहराया। भक्ति क्षेत्र में ग्रन्थ की वाणी कर्मकाण्ड का खण्डन और कर्मयोग का प्रतिपादन करती है। ग्रन्थ की वाणी बुराई की निन्दा एवं आलोचना ही नहीं करती बल्कि बुराई को दूर करने का मार्ग भी बताती है। ग्रन्थ की वाणी कर्मशील जीवन की उत्तमता घोषित करती है और निष्काम भाव का महत्व प्रतिपादित करती है- करम करत होवै निहकरम, तिसु वैसनो का निरमल धरम। काहू फल की इछा नही बाछै, केवल भगति कीरतन संगि राचै।।3 अर्थात् निष्काम कर्म ही सच्चा वैष्णव है। ग्रन्थ की वाणी के माध्यम से आदर्श व नवीन जीवन मूल्यों की स्थापना, गृहस्थ जीवन को मान्यता, कर्मयोग का प्रतिपादन, नाम-स्मरण, गुरु-महिमा, नारी के प्रति आदर्श भावना, जाति-पाति का विरोध और नैतिकता पर बल दिया गया है। इस प्रकार ग्रन्थ की वाणी आदर्श एवं नवीन जीवन मूल्यों की स्थापना पर बल देती हैं।

यह एक ऐसा धर्म ग्रन्थ है जिसमें सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण निहित है। अर्थात् ये महान् ग्रन्थ मानव-मुक्ति के द्वार खोलता है। ये ग्रन्थ जात-पात, ऊँच-नीच, धर्म-अधर्म आदि को स्थान न देते हुए 'सर्वधर्म समभाव' व 'ईश्वर एक है' की भावना को बल देता है। गुरु ग्रन्थ साहिब समाज में समता स्थापित करने का सन्देश देता है। यह ग्रन्थ आध्यात्मिक, दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक तथा संगीतात्मक सभी दृष्टियों से भारतीय संस्कृति का पुनरुत्थान करता हुआ राष्ट्रीय जागरण का सन्देश लेकर आया है।

अन्त में इतना ही कहा जा सकता है कि इन गुरुओं एवं सन्तों ने अपनी वाणी के माध्यम से समाज में समता स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने कहा कि न कोई धर्म ऊँचा है ना कोई मनुष्य। जात-पात खण्डन गुरु ग्रन्थ साहिब में बड़ी मात्रा में हुआ है। कुल मिलाकर गुरु ग्रन्थ साहिब में मानव धर्म को प्रमुखता देते हुए अच्छे कर्म करते हुए सत्य मार्ग पर चलने को प्रेरित किया है। इसी में गुरु ग्रन्थ साहिब का सार-सन्देश है जो आज भी प्रासंगिक है।